ब्रह्मपुत्र–एक महा नद

पंकज गर्ग
रा.ज.स., रुड़की

हिमालय के कैलाश शिखर के पास मानसरोवर से निकला दूर्गम और दरांत, सबसे अधिक पानी वाला अनेक किवदंतियों का वाहक रहस्यमय महानद हैं 'ब्रह्मपुत्र'। ब्रह्मपुत्र पर्वत श्रृंखलाओं के बीच चमकती चादर जैसा प्रचण्ड प्रवाहमय महानद 'ब्रह्मपुत्र' की भीतरी धाराये ऊपरी धाराओं से प्रबल हैं। यह महानद पूर्वाचंल में फैला हुआ है। इस क्षेत्र में जल शक्ति की प्रचुर मात्रा प्रदान करता है।

यह महानद, मानसरोवर से पूर्व की ओर हिमालय और तिब्बत के पहाड़ी खण्ड से होकर बहता है। तिब्बत में इस नदी को "सागपो" के नाम से जाना जाता है। करीब 1100 किमी0 बहने के बाद यह "आबर" की पहाड़ियों से मुड़कर भारत के अरूणाचल प्रदेश के प्रवेश करता है। तिब्बत से भारत में प्रवेश करते समय यह लगभग 40–50 फुट ऊंचे प्रपात का रूप घारण करता है। असम की घाटी के नीचे सतह पर एक दिवंग और ब्रह्मकुण्ड़ जल धारा से मिलकर ब्रह्मपुत्र बन जाता है। ब्रह्मपुत्र न केवल एक नदी है बल्कि यह एक जीवित प्रतीक और असम की आत्मा है। इसकी लहरों पर असाम वासियों की स्वतंत्रता और स्मृतियां दर्ज हैं और यह हर छोटी–बड़ी घटनाओं का साक्षी है।

"ब्रह्मपुत्र" का नाम पुल्लिंग है, जबकि भारत की शेष नदियां स्त्रीलिंग हैं। किवदंतियों के अनुसार दूसरी नदियां स्त्रीलिंग की प्रतीक हैं, परन्तु ब्रह्मपुत्र सृष्टिकर्ता स्वंम् "ब्रह्मा का पुत्र" है। इस संबंध में रोचक प्रसंग है,– शातु मुनि अपनी पत्नी अमोधा के साथ इस अंचल में आश्रम बनाकर तपस्या करते थे। एक बार अमोधा के सोन्दर्य पर स्वम् ब्रह्म आसक्त हो गये और उन्होंने अमोधा से प्रेम निवेदन किया। लेकिन पर पुरूष से सम्बन्ध बनाना उचित न समझ कर अमोधा ने ब्रह्म को इंकार कर दिया परन्तु ब्रह्मा इतने कामोत्तेजित हो चुके थे कि उसके निकट ही उनका स्खलन हो गया। शातु मुनि को बाहर से लौटने पर पता चला तो उन्होंने ब्रह्म का वीर्य अमोधा के गर्भ में स्थापित कर दिया। जिस पुत्र का जन्म हुआ वह ब्रह्मपुत्र कहलाया। शातु मुनि जिस कुण्ड के समीप रहते थे उसे ब्रह्ममकुण्ड़ कहा जाता है।

असमिया भाषा में ब्रह्मपुत्र का नाम "लुईत" है जो संस्कृत शब्द 'लोहित्य' से बना है। जिसका अर्थ होता है लाल नदी। सम्भवतः जब वर्षा से इस क्षेत्र की लाल मिट्टी इसमें बहकर आती है तो इसका जल लाल हो जाता है। लेकिन एक और पौराणिक कथा प्रचलित है, मर्हिष भृगु का पौत्र एवं ऋषि जगदाग्नि का पुत्र राम अति ओजस्वी और पितृ भक्त था। एक बार जगदाग्नि की पत्नी रेणूका जल लाने के लिये तट पर गयी। वहां उसने चित्रटक नामक गर्धव को अपनी पत्नियों के साथ काम–क्रीडा करते हुये देखा रेणूका के हृदय में इस क्रीड़ा को देख कर विकार उत्पन्न हो गया। ऋषि जगदाग्नि को तपस्या द्वारा यह ज्ञात हो गया उन्होंने क्रोध में आकर रेणूका के आश्रम लौटने पर अपने बड़े बेटे को आज्ञा दी वह अपनी माँ का वध कर दे। परन्तु उसने ऐसा करने से इंकार कर दिया लेकिन पितृ भक्त पुत्र राम ने कुठार से अपनी माता और भ्राता के सिर काट दिये इस वीभत्स नर संहार के बाद परशु यानि कुठार उसके हाथ से चिपक गया। उन्होंने अनेक तीर्थयात्रा की और अन्त में इस नद के जल से अपनी माँ का रक्त धोकर कलंक मुक्त हुये। उसके हाथ से चिपका परशु निकल कर गिर पड़ा तभी से उनका नाम परशुराम पड़ा और ब्रह्मपुत्र का नाम 'लोहित' हुआ।

जल वैज्ञानिक समस्यायें

ब्रह्मपुत्र नदी देश की विशाल नदी है जिसका विवरण संसार की दस प्रमुख नदियों में से एक है। वह अपने ऐतिहासिक निस्तारण के लिये विश्व में प्रसिद्ध है। ब्रह्मपुत्र घाटी की चौड़ाई 80 किमी जबकि नदी धारा की चौड़ाई 19 किमी0 तक है।

ब्रह्मपुत्र नदी बाढ़ के दौरान विपुल जल राशि लेकर चलती है। मानसून के दौरान अधिक प्रवाह के कारण किनारों को काट कर चलती है। जिसके कारण नीची भूमि पर मृदा अपरदन के कारण जल फैल जाता है। मानसून के दौरान, तीव्र वर्षा, पहाड़ियों का गिरना, मिट्टी कटाव व मार्ग परिवर्तन बाढ़ की विभिषिका को और बढ़ा देता है।

ब्रह्मपुत्र की सहायक नदियां

कोको (भारत) से कुछ दूरी पर ब्रह्मपुत्र नदी में मिलने वाली प्रमुख नदियां दिबांग, लोहित एवं दिहांग हैं। ब्रह्मपुत्र के उत्तरी सिरे पर मिलने वाली प्रमुख नदियां सुबन सिरी, जय आरेली, धान सिरी (उत्तरी) पुथीमारी, पगलडिया, मानस, चमपावति और सन्कोश इत्यादि हैं। जो पूर्वी हिमालय से निकलती हैं। ब्रह्मपुत्र के दक्षिणी सिरे पर मिलने वाली प्रमुख सहायक नदियां बूढ़ी दिहिंग, दिशांग, दिखु, धन सिरी (दक्षिणी) और कोपली इत्यादि हैं। ब्रह्मपुत्र के उत्तरी एवं दक्षिणी सिरों पर मिलने वाली प्रमुख सहायक नदियां और उनकी लम्बाई:–

क्र0 सं0	उत्तरी सिरे की सहायक नदियां	लम्बाई किमी	क्र0 सं0	दक्षिणी सिरे की सहायक नदियां	लम्बाई किमी
1	सिमेन	580	1	डिबू	592
2	जिया धोल	570	2	बूढी दिहिंग	540
3	सुबन सिरी	430	3	दिशांग	515
4	बुरइ	392	4	दिखु	505
5	बारगंगा	382	5	झाजी	495
6	जय भारेली	338	6	धनसिरी (दक्षिणी)	420
7	गमारू	280	7	कोपिली	220
8	धन सिरी उत्तरी	270	8	कुलसी	140
9	नोनदी	230	9	देव सिला	130
10	नानई नदी	215	10	दुध नई	108
11	पुथी मारी	172	11	कृष्णई	107
12	पगलडिया	170	12	जिनारी	100
13	बैकी नदी	115	13		
14	मानस	85	14		

नदी के मुख्य आंकड़े

1	उद्गम स्थान	1	मनसरोवर झील, कैलाश पर्वत हिमालय
2	नदी की लम्बाई	2	2880 किमी (918 किमी भारत में)
3	बेसिन का क्षेत्रफल	3	580000 वर्ग किमी (भारत 194413 वर्ग किमी)

4	मुख्य सहायक नदियां	4	कोपली, तिस्ता, गुमती, दिबंग
5	मृदा प्रकार	5	लाल मिट्टी, पीली मिट्टी
6	औसत वार्षिक वर्षा	6	2125 mm
7	मुख्य शहर	7	गुवाहाटी, शिवसागर, डिबूगढ़
8	मुख्य बांध	8	साकेष बहुद्देश्य परियोजना, जलाशय योजना, धनश्री योजना
9	किन राज्य से गुजरती है	9	अरूणाचल प्रदेश, आसाम, मेघालय, नागालैण्ड, सिक्किम, प0 बंगाल
9	प्रसिद्ध स्थान	9	काजीरंगा पार्क, गुवाहटी, शिलांग
10	अन्तिम छोर	10	बंगाल की खाड़ी
11	जल विद्युत क्षमता	11	31012 मेघावाट 60% लोड पर
12	औसत वार्षिक बहाव	12	537 घन किमी
13	उपयोग युक्त बहाव	13	240 घन किमी
14	जलवायु	14	तपमान 15 – 27^0C मध्य
16	जनसंख्या घनत्व		149 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी

1. नदी का औसत ढलान 1:515
2. नदी की सबसे कम चौड़ाई 1.20 किमी, असम घाटी में स्थित 'पाण्डू' में है।
3. वार्षिक औसत वर्षा 2125 mm असम में कामरूप जिले में तथा 4142 mm अरूणाचल प्रदेश के तिराप जिले में
4. नदी घाटी की औसत चौड़ाई 80 किमी है।
5. (अ) पाण्डू में अधिकत निस्सरण 23/8/02 – 72794
   (ब) पाण्डू में न्यूनतम निस्सरण 20/2/68 – 1751 क्यूमैक्स
   (स) पाण्डू में शुष्क ऋतु में 4420 क्यूमैक्स
6. नदी धारा की औसत चौड़ाई 16 किमी है।
7. नदी की धारा में घुमाव व परिवर्तन के कारण संसार का सबसे बड़ा प्रायद्वीप माजुलि का निमार्ण हुआ।